पाठ - 12 : पद्माकर

मूल भाव

कवि पद्माकर के काव्य में रीतिकालीन कविता की सभी प्रमुख विशेषताएँ विद्यमान हैं। वे रीतिबद्ध काव्यधारा के प्रतिभा-संपन्न कवि थे। उनमें शृंगार रस की अभिव्यक्ति की विलक्षण प्रतिभा रही है। इसी कारण कवि पद्माकर रीतिकाल के श्रेष्ठ कवि कहे जाते हैं। उत्कृष्ट कल्पना की उड़ान और विषय-विवेचन की विशुद्धता भी पद्माकर की विशेषता है, जिससे काव्य में लाक्षणिकता और मधुरता आ जाती है। उनके काव्य की एक और विशेषता है-दृश्य और शब्द-योजना के द्वारा ऋतु-वर्णन।

मुख्य विशेषताएं

वसंत कविता

औरै भाँति कुंजन में गुंजरत भौंर भीर,
औरै डौर झौरन पै बौरन के ह्वै गये।
कहै पद्माकर सु औरै भाँति गलियान,
छलिया छबीले छैल औरै छबि छ्वै गये।
औरै भाँति बिहग-समाज में अवाज होति,
ऐसे ऋतुराज के न आज दिन द्वै गये।
औरै रस, औरै रीति, औरै राग, औरै रंग,
औरै तन, औरै मन, औरै बन ह्वै गये।

इस कवित्त में कवि ने वसंत के कारण प्रकृति के रूप-सौंदर्य में आए अवर्णनीय परिवर्तन का बड़ा अनूठा और उल्लासमय चित्रण किया है। ऋतुराज वसंत का आगमन प्रकृति में और मानव समाज में बाहर-भीतर अत्यधिक मादकता भर देता है। कवि ने शब्द ध्वनियों के माध्यम से वसंत का मनमोहक वर्णन किया है। कवि कहता है कि वसंत को आए अभी दो दिन ही हुए हैं कि कुंजों में भौंरों की भीड़ कुछ और ही तरह से गूँजने लगी है। भौंरों का समूह प्रसन्नता और हर्षोल्लास के साथ मानो वसंत का उत्सव मनाने के लिए एकत्रित होकर समवेत स्वर में (एक साथ) गुंजार कर रहा हो अर्थात् पुष्प-समूह ने भौंरों में एक अलग ही तरह की प्रसन्नता और उत्साह भर दिया है।

डाल-डाल पर बौरों के जो गुच्छे दिखाई देने लगे हैं उनका रूप-स्वरूप कुछ ऐसा हो गया है कि उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। गली-गलियारों में बने-ठने युवक-युवतियाँ भी वसंत के सौंदर्य से उत्पन्न काम भाव से पीड़ित, परंतु हर्षित दिखाई देते हैं।ऐसे मोहक ऋतुराज बसंत को आए अभी कुछ ही समय बीता है। पक्षी भी सामूहिक रूप से प्रसन्नतापूर्वक चहकने लगे हैं। कवि कहता है कि यह परिवर्तन सब ओर दिखाई दे रहा है। सारा वातावरण रस से, रंग से, रीति से, गीत और प्रेम से बदल गया है। तन, मन और वन-उपवन सभी में बदलाव आ गया है। इस बदलाव को अनुभव ही किया जा सकता है, समझाया नहीं जा सकता।

फाग कविता

एकै संग धाए नँदलाल औ गुलाल दोऊ,
दृगनि गए जु भरि आनंद मढ़ै नहीं।
धोय-धोय हारी, 'पद्माकर' तिहारी सौंह,
अब तौ उपाय एक चित्त में चढ़ै नहीं।
कैसी करौं, कहाँ जाऊँ, कासे कहूँ, कौन सुनै,
कोऊ तो निकासो, जासै दरद बढ़ै नहीं।
एरी मेरी बीर! जैसे-तैसे इन आँखिन तैं।
कढ़िगो अबीर, पै अहीर तो कढ़ै नहीं।

इस कवित्त में पद्माकर ने फाग (होली) का बड़ा हृदय स्पर्शी चित्र अंकित किया है। एक गोपिका कृष्ण के साथ गुलाल से फाग खेलने का बड़ा सजीव वर्णन अपनी प्रिय सखी से करती है। पूरा कवित्त एक गोपिका का कथन है। उसकी परेशानी

क्या है? इसे समझने के लिए होली के एक रिवाज़ को याद कीजिए। अबीर-गुलाल हवा में उड़ाना-उछालना। यह उड़ता गुलाल तो गोपिका की आँख में चला ही गया है। उसके साथ नंदलाल भी आँख में बस गए हैं। सोचिए समस्या क्या है? केवल गुलाल आँखों में पड़ जाए तो उसे निकालने का क्या उपाय हो सकता था? गोपी आँखें धो-धोकर हार गई है, उसे सफलता नहीं मिल पा रही-ऐसा क्यों? उसे क्या छटपटाहट है? कासे-कहूँ? कौन सुने? में क्या कथा छिपी है? क्या गोपी की बात विश्वसनीय लगती है?

नंदलाल के आँखों में बस जाने का दर्द दूर करने के लिए वह क्या नहीं समझा पा रही है? अबीर तो जैसे-तैसे निकल गया, पर अहीर नहीं। पर अहीर कौन है? कल्पना कीजिए। क्या गोपी सचमुच श्रीकृष्ण को आँखों से दूर करना चाहती है?

यहाँ कृष्ण के प्रति उमड़े प्रेम को आँखों में अबीर पड़ने की स्थिति के माध्यम से दर्शाया गया है, पर जितनी सरलता से अबीर धुल जाता है उतनी सरलता से कृष्ण प्रेम नहीं धुल सकता। गोपी भी ऐसा नहीं चाहती है, वह तो अपनी सहेली की सौगंध खाकर उसे आश्वासन दिलाना चाहती है कि वह कृष्ण को निकाल नहीं पा रही है और न उसे इसका कोई उपाय सूझ रहा है!

कवि के रूप चित्र भी रंगीन और आकर्षण हैं। फाग के जो नयनाभिराम सहृदयता भरे दृश्य चित्र कवि ने अंकित किए हैं, उनमें भाव-प्रवणता और दृश्यविधायिनी क्षमता का पूरा परिचय मिलता है।

अपना मूल्यांकन कीजिए

- पद्माकर के वसंत-वर्णन की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
- पद्माकर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालें।
- प्रकृति के प्रति आप अपनी जिम्मेवारी कैसे निभाते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
- पद्माकर और बिहारी के प्रकृति चित्रण में आप क्या अंतर समझते हैं? वर्णन कीजिए।
- 'फाग' कविता पढ़ने के बाद आपके मन में होली के कौन-कौन से दृश्य उभरे? उल्लेख कीजिए।